झूटे रसूल का नया कलमा

आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदियल्लाहो तआला अन्हो

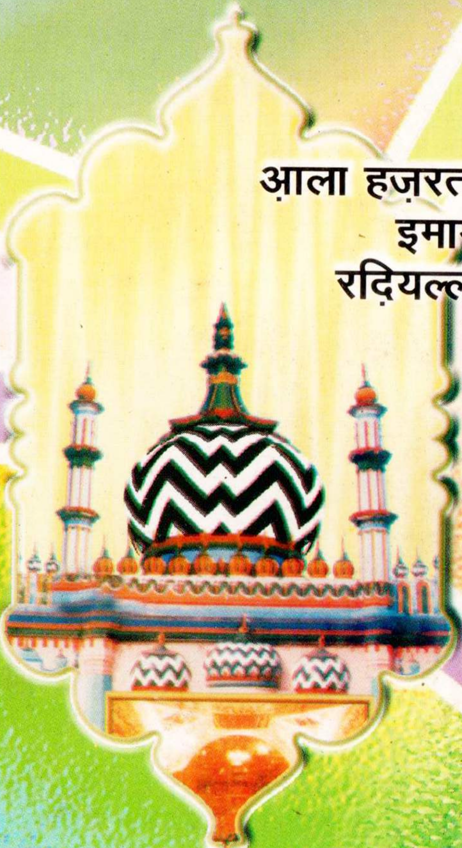

रज़ा एकेडमी मुंबई-3

ग़ैर रसूल को रसूल कहने का शरई हुक्म

الجبل الثانوی علی کلیۃ التھانوی

का हिन्दी तर्जमा

झूटे रसूल का नया कलमा

✣ तस्नीफ़ ✣

मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत
मौलाना अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ

-: बफ़ैज़ :-

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ़ज़म हज़रत अल्लामा शाह
मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी (अलैहिर्रहमा)

नाशिर : रज़ा एकेडमी
२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुम्बई-४०० ००३.

कुछ बातें

हुज़ूरे अक़दस, सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم का इरशादे गिरामी है---
तर्जमा :- मेरी उम्मत तिहत्तर (73) फ़िरकों में बट जाएगी सिर्फ़ एक फ़िरका जन्नती होगा बाक़ी सब जहन्नमी । (तिर्मीज़ी शरीफ़, जिल्द 2 सफ़ा 89)

सरकार صلی اللہ علیہ وسلم के इस फ़रमान के मुताबिक़ आज बहुत्त से बद दीन गुमराह फ़िरके वजूद में आ चुके हैं, और बहुत से ज़ाहिर होंगे । इन्ही गुमराह फ़िरकों में एक फ़िरका वहाबी, देवबन्दी भी है । जो अम्बिया-ए-किराम और ख़ास कर हुज़ूरे अकरम सहाबा, व औलिया-ए-किराम की शान में निहायत गुस्ताख़ हैं ।

इस फ़िरके का बानी मुहम्मद इब्ने अ़ब्दुल वहाब नजदी था, जिस ने सन 1150 ईस्वी में नजद में इस फ़िरके की बुन्याद रखी । बाद में इस्माईल दहलवी, क़ासिम नानूतुवी, रशीद अह़मद गंगोही, अशरफ़ अ़ली थानवी, और इल्यास कान्धेलवी, वग़ैरा जैसे लोगों ने अपनी गुमराह कुन, फ़ितना परवर, और गुस्ताख़ना तअ़लीमात से वहाबी फ़ितने को हिन्दुस्तान में फैलाया और लोगों को गुमराहियत की तरफ़ राग़िब किया । ऐसे पुरफ़ितन माहोल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दीदे दीन व मिल्लत, अशशाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी رضی اللہ المولی تعالی عنہ को इस जहाँने फ़ानी में रौनक़ अफ़रोज़ फ़रमाया । आज दुनिया इमामे अहले सुन्नत के कारनामों से ख़ूब अच्छी तरह वाक़ीफ़ है । आप ने जहाँ अ़क़ाएदे हक़्क़ा की सही तर्जमानी फ़रमाई वहीं ऐसे गुमराह, बद दीन, फ़िरकों का अज़ीम रद्द भी फ़रमाया । आज आप की तेरा सौ (1300) ज़ायेद किताबों का अम्बार इस बात का जीता जगता सुबूत है ।

इमामे अहले सुन्नत और मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी का ज़माना एक ही था, उसी ज़माने में थानवी ने "हिफ़्ज़ुल ईमान" नाम की एक गुमराह कुन किताब लिखी जिसमें लिखा के हुज़ुर صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم को जैसा इल्मे ग़ैब है वैसा इल्मे ग़ैब तो पागलों, और जानवरों को भी हासिल है । और अपना कलमा لا الہ الا اللہ اشرف علی رسول اللہ पढ़ने वाले मुरीद की तरफ़दारी की और उसका ऐसा कलमा पढ़ना जाइज़ बताया । चुनानचे उस वक़्त इमामे अहले सुन्नत ने अपनी मुजद्दिदाना शान से थानवी और उसके मुरीद की इस गुमराह बक्वास का बड़ चड़ कर रद्द फ़रमाया और थानवी की उस बक्वास के रद्द में येह रिसाला 1337 हिजरी मे तहरीर फ़रमाया जो इस वक़्त आप के हाथों में है । हालाँकि येह मुख़्तसर रिसाला है लेकिन इसमें भी आला हज़रत का अपना जाना पहचाना अन्दाज़ नुमाया नज़र आता हैं गोया दरया को कूज़े में समेट लिया हो ।

बिरादराने अहले सुन्नत से दरख़्वास्त है कि इस रिसाले को ग़ौर से पढ़े और फिर फ़ैसला फ़रमाए के क्या ऐसे लोग हक़ीक़त में मुसलमान कहलाने के लाएक़ है ? क्या ऐसे लोगों को अब भी अच्छा कहा जाएगा ? क्या थानवी जैसे बद दीन को मुसलमान समझा जाए ? रब्बे क़दीर अपने हबीबे पाक सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़े में मुसलमानों को हक़ समझने और हक़ क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएँ । आमीन ।

-: *ना चीज़ सगे रज़ा* :-

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ अशरफ़ी रज़वी

بسم الله الرحمن الرحيم

نحمده ونصلی علی رسوله الکریم

सवाल

आप का फ़ैज़ हमेशा रहे एक शख़्स जिसका नाम ***अशरफ़ अ़ली*** (थानवी) है, उसके बारे में आप का क्या इरशाद है---जिसे उसके एक चाहने वाले (मुरीद), ने लिख कर भेजा के कलमा शरीफ पढ़ता हूँ لا الٰہ الا اللہ اشرف علی رسول اللہ लेकिन "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" की जगह हुज़ूर (यानी अशरफ अ़ली थानवी) का नाम लेता हूँ, इतने में ख़्याल हुआ के तुझ से ग़लती हुई । दोबारा पढ़ता हूँ बे साख़्ता बजाए रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के नाम के अशरफ़ अ़ली निकल जाता है, मुझ को इल्म है कि इस तरह दुरूस्त नही लेकिन बे इख़्तियार ज़बान से यही निकलता है दो तीन बार जब यही सूरत हुई तो हुज़ूर (यानी थानवी) को अपने सामने देखता हूँ इतने में मैं ज़मीन पर गिर गया और निहायत ज़ोर के साथ चीख़ मारी और मुझ को मालूम होता था कि अन्दर कोई ताक़त न रही इतने में बन्दा ख़्वाब से बेदार हो गाया लेकिन बे हिसी और ना ताक़ती का असर बदस्तूर था लेकिन ख़्वाब व बेदारी में हुज़ूर (अशरफ़ अ़ली थानवी) का ही ख़्याल था बेदारी में कलमा शरीफ़ की ग़लती पर ख़्याल आया तो इरादा हुआ के इस ख़्याल को दिल से दूर किया जाए । ***यही*** सोच कर बैठ गया फिर दूसरी करवट लेट कर कलमा शरीफ की ग़लती की तलाफ़ी में रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूँ लेकिन फिर भी यह कहता हूँ اللّٰھم صل علیٰ سیدنا و نبینا و مولانا اشرف علی (अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यदना व नबीयना व मौलाना अशरफ अ़ली)

(مَعَاذَ اللّٰہ मआज़ल्लाह) हालाँकि अब बेदार हूँ ख़्वाब नहीं लेकिन बे इख़्तियार हूँ, ज़बान अपने क़ाबू में नहीं उस रोज़ ऐसा ही कुछ ख़्याल रहा । दूसरे रोज़ ख़ूब रोया और भी बहुत सी वजूहात हैं जो हुज़ूर (यानी अशरफ़ अ़ली थानवी) के साथ मुहब्बत की वजह से हैं कहाँ तक अ़र्ज़ करूँ ।

ख़त्म हुआ वोह जो उस शख़्स ने लिखा, उस पर ***अशरफ़ अ़ली (थानवी) ने उसे जवाब लिखा कि*** :----

"इस वाक़ेअ़ में तसल्ली थी जिसकी तरफ़ तुम रूजू करते हो वोह मुत्बअ़े सुन्नत है" । (यानी तुम्हारा इस तरह कलमा पढ़ने में कोई हर्ज नहीं इसके लिए तुम्हें परेशान होने की भी ज़रूरत नहीं तसल्ली रखो, तुम्हारा इस तरह का कलमा पढ़ना दरअस्ल सुन्नत की पैरवी और मुझ से मुहब्बत की वजह से है) । (مَعَاذَ اللّٰہ मआज़ल्लाह)

और येह सारा वाक़ेअ़ ख़ूद अशरफ़ अ़ली ने अपने माहवारी रिसाला ***"अल इम्दाद"***[1] में छापा और शाऐ (प्रकाशित) किया । और उस पर ख़ूशियाँ मनाता हुआ बल्कि अपने मुरीदों को इस तरफ़ बुलाता हुआ के उसकी तअ़ज़ीम और उसकी फ़ज़ीलत की अहमियत में ऐसा ही बड़ चड़ कर कहे इस लिए के उसके रिसाले का मक़्सद ही येह हैं के मुरीदैन उसे अपनी हिदायत में राहे रास्त (दीन के सही रास्ते) पर जाने । तो उन दोनों शख़्सों (यानी अशरफ़ अ़ली थानवी और उसके मुरीद) के बारे में शरीअ़त का क्या रौशन हुक्म है ? और येह अशरफ़ अ़ली वही है जिसने अपनी एक किताब में, के तीन वरक़ से ज़्यादा की नहीं मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की तरफ़ इल्मे ग़ैब की निस्बत झूटी करने को लिखा कि ----

"अगर तमाम ऊ़लूम मुराद हैं इस तरह के उसकी एक क़िस्म भी ख़ारिज न रहे तो उसका ग़लत होना नक़्ली व अक़्ली

1. "रिसाला अल इम्दाद" मत्बुअ़ :- थाना भवन, शव्वाल 1335 हिजरी, सफ़ा नं. 34 । फ़ारूक़ ।

दलीलों से साबित है, और अगर कुछ ऊ़लूमे ग़ैब मुराद हैं तो उसमें हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم का कौनसा कमाल ऐसा इल्मे ग़ैब तो हमें तुम्हें बल्कि हर किसी को व पागलों को बल्कि तमाम जानवरों के लिए भी ह़ासिल्ल है"[1] । (मआ़ज़ल्लाह)

और बेशक उसके इस क़ौल (कहने) के सबब ह़रमैन शरीफ़ैन (मक्का व मदीना शरीफ़) के बड़े बड़े बुज़ुर्ग ओ़लमा-ए-दीन ने उस पर (यानी अशरफ़ अ़ली थानवी) पर हुक्म लगाया के----वोह काफ़िर व मुरतद (दीने इस्लाम से फिर जाने वाला) हो गया और येह के उस के कुफ़्र में जो शक करे वोह भी काफ़िर है जैसा के (किताब) "हुस्सामुल ह़रमैन" में तफ़्सील के साथ बयान है ।

हमें फ़ायदा दीजिये, अल्लाह आप का सवाब बहुत ज़्यादा करे ।

अल जवाब

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اللّٰھم لک الحمد : صلّ علی نبیّک و نبی الحمد :-
وآلہ وصحبہ الحمد رب انی اعوذبک من ھمزات الشّٰطین واعوذبک رب ان یحضرون

इलाही तेरे ही लिए हम्द (तअ़रीफ़े) हैं अपने ***नबी*** पर दुरूद भेज जो तअ़रीफ़ किये गए नबी है और उनके आल व असह़ाब पर के दीन के सुतून हैं । अए मेरे रब मैं तेरी पनाह मॉगता हूॅ शैतानों के झट्कों से और अए मेरे रब मैं तेरी पनाह मॉगता हूॅ उससे कि मेरे पास आऍ ।

अइम्मा-ए-दीन ने कुफ़्र कहने में ज़बान बहेकने का बहाना क़ुबूल न फरमाया वरना हर ख़बीस दिल वाला जुर्अत करता के खुल्लम खुल्ला अल्लाह व रसूल को गालियॉ दे और कहे के मेरी ज़बान बहेक गई ।

1. "हिफ़्ज़ुल ईमान" सफा नं. 8, मत्बुअ़ :- दारूल किताब देवबन्द, यू.पी ।फारूक।

हज़रत ***इमाम क़ाज़ी अयाज़*** رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने (अपनी किताब) "शिफ़ा शरीफ़" में फ़रमाया--------------------------------------

कोई शख़्स ज़बान बहेकने के दावे से कुफ़्र बकने में लाचार न समझा जाएगा [1] ।

لا یعذر احد فی الکفر بدعوی زلل اللسان اھ

और उसी (किताब "शिफ़ा शरीफ़") में हज़रत ***इमाम मुहम्मद बिन अबी ज़ैद*** से है कि---------------------------

ऐसी बात में ज़बान बहेकने का बहना किसी का न सुना जाएगा [2] ।

لا یعذر احد بدعوی زلل اللسان فی مثل ھذا اھ

और उसी (किताब "शिफ़ा शरीफ़") में है के------------

इमाम अबूल हसन क़ालेबी ने उस शख़्स के बारे में जिस ने नशे की हालत में नबी-ए-करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की शान में गुस्ताख़ी की, फतवा दिया के क़त्ल किया जाए इस लिए के उस पर गुमान होता है के येह उसका अक़ीदह है, और अपने होश में भी ऐसा कहा करता था [3] ।

امام ابوالحسن القالبی فیمن شتم النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی سکرہ یقتل لانہ یظن بہ انہ یعتقد ھذا ویفعلہ فی صحوہ اھ

फिर ज़बान बहेकना अगर होतो एक दो हुर्फ़ में न येह कि दिन भर बहेके येह न क़ाबिले क़ुबूल न किसी तरह अक़्ल में आने वाला ।

1. शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2 सफ़ा नं. 401
2. शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2 सफ़ा नं. 401
3. शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2 सफ़ा नं. 402

। फारूक़ ।

"जामऊल .फ़ुज़ूलीन"[1] के हिस्सा नं 38 में है-----------

एक शख़्स तरह तरह की मुसीबतों में गिरफ़तार हुआ उस पर बोला के (अए अल्लाह) तूने मेरा माल और बच्चा ले लिया और येह येह चीज़ ले ली अब तू और क्या करेगा और रह ही क्या गया है जो तू ने न किया और इसी तरह के और अलफ़ाज़ कहे, वोह (ऐसा कहने से) काफ़िर हो गया । ऐसा ही हज़रत ***इमाम अ़ब्दुल करीम*** से रिवायत हुआ उन से अ़र्ज़ की गई---भला अगर बिमार ने ऐसा कहा और बिमारी में तक्लीफ़ की वजह से उसकी ज़बान पर येह अलफ़ाज़ जारी हुए तो क्या हुक्म है ? फ़रमाया दो एक हुर्फ़ बग़ैर किसी इरादे के ज़बान से निकल सकते हैं । इस में येह इशारा फ़रमाया के उसे काफ़िर माना जाएगा और ज़बान बहेकने का बहाना सच्चा न समझा जाएगा ।

ابتلی بمصیبات متنوعة :-
فقال اخذت مالی وولدی
واخذت کذا وکذا فماذا
تفعل ایضا وماذا بقی
لم تفعله وما اشبهه
من الالفاظ کفر کذا حکی
عن عبد الکریم فقیل
له ارأیت لو ان المریض
قال ذلک وجری علی لسانه
بلا قصد لشدة مرضه
قال الحرف الواحد یجری
ونحوه قد یجری علی
اللسان بلا قصد اشارا
لی انه یحکم بکفره ولا
یصدق اھ ———

——— ——— ———
——— ——— ———
———————
——— ———————
——— ———————
——— ——— ———

1. और इमाम क़ाज़ी ख़ाॅ,ने अपने फ़तवे में फ़रमाया--एक आध हुर्फ़ ज़बान से बग़ैर इरादे के निकल सकते है न के इतनी तवील इबारत, तो वोह अपने दावे में सच्चा न माना जाएगा ।

ط وقال الامام قاضی خان فی فتاواہ
انما یجری علی لسانه حرف واحد
ونحو ذلک اما مثل هذه الکلمات الطویلة
لا تجری علی لسانه من غیر قصد فلا یصدق -

तो जब आधी लाईन में ज़बान बहेकने का बहाना न माना गया तो उसमें क्यों कर मान लिया जाएगा जिसे उसने (यानी थानवी के मुरीद ने) सोते और जागते दिन भर रटा बल्कि वोह बेशक हद से गुज़रा हुआ सख़्त झूटा है क्या तुम नहीं देखते के अल्लाह तआला ने जिस्म के हिस्सों को दिल का फ़रमाबरदार बनाया है और हमारे सच्चे और सच की रौशन बाते फ़रमाने वाले **नबी** صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم ने इरशाद किया----------(फ़रमाते है)----------

الا ان فی الجسد مضغۃ اذا صلحت صلح الجسد کلہ واذا فسدت فسد الجسد کلہ الا وھی القلب ۔

"(अए लोगों) सुनते हो बदन में एक गोश्त का टूकड़ा है के वोह सॅवरे तो सारा बदन सॅवर जाए और वोह बिगड़े तो सारा बदन बिगड़ जाए, सुनते हो वोह दिल है ।

तो उसकी (यानी थानवी के मुरीद की) बात और उसकी ज़बान न बिगड़ी मगर येह के उससे पहले उसका दिल और उसका बातिन बिगड़ चुका था और येह शख़्स येह दावा करता है कि ज़बान उसके मुॅह में एक बे क़ाबू जानवर है कि दिल की फ़रमाबरदार नहीं जैसे कोई मुॅह ज़ोर निहायत ही शरीर घोड़ा किसी कम्ज़ोर हद भर के सवार के नींचे हो के वोह तो (घोड़े को) दहनी तरफ़ ले जाना चाहता है और घोड़ा नहीं फिरता मगर बाई तरफ़, वोह जब उसे दहनी तरफ़ फेरता है तो घोड़ा ख़ास बाई जानिब जाता है ।

यहाँ तक कि सारे दिन ज़बान व दिल में झगड़ा रहा और ज़बान ही ग़ालिब रही । येह न अक़्ल में आने की बात है न सुनी जाए बेशक उस पर कुफ़्र का ऐसा हुक्म है जो टल नही सकता, और कभी तुम ने किसी इस्लाम का दावा करने वाले को सुना के दिन भर मुहम्मद रसूलुल्लाह कहने की जगह फ़्लॉ रसूलुल्लाह कहे या अपने बाप से कहे अए कुत्ते के पिल्ले, अए

सुअर के बच्चे और सुबह से शाम तक उसे दोहराता रहे फिर कहे के मैं तो येह कहना चाहता था अए मेरे बाप अए मेरे सरदार ज़बान मेरी मुख़ालेफ़त कर के बाप और सरदार से कुत्ते और सुअर कहने की तरफ़ जाती थी । पाकी है अल्लाह को येह न हुआ न हो और इसे पागल के सिवा कोई न क़ुबूल करेगा । येह तो उस कहने वाले का हुक्म है और वोह जो अशरफ़ अ़ली (थानवी) ने उसे जवाब में लिखा तो उस कुफ़्र को पसंद करता है । और कुफ़्र को पसंद करना बेशक कुफ़्र है और उस पसंद करने का यही सबब हुआ कि उसने इसमें तअ़ज़ीम देखी और अपने आप को अल्लाह तआ़ला का रसूल बताना और नबी-ए-करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के बदले अपने उपर दुरूद और नुबुव्वत से अपनी तअ़रीफ़ तो ख़ूशी ख़ूशी इस सब को जाइज़ रखा और उस तबाह होने वाले के लिए तसल्ली ठहराया । भला देखो तो अगर कोई शख़्स थानवी और उसके माँ बाप को दिन भर गालियाँ देता और कहता मैं तो तेरी तअ़रीफ़ करना चाहता था ज़बान ने इस गुफ़्तगू में मेरा कहना न माना तुझे और तेरी माँ और तेरे बाप को सुबह से गालियाँ देती रही यहाँ तक के आफ़ताब (सूरज) छुप गया तो क्या अशरफ़ अ़ली या कोई कमीना आदमी अगरचे चमार या भंगी (मेहतर) या उन से भी ज़्यादा कमीना इस बहाने को क़ुबूल कर लेता और कहता "इस में तुम्हारे लिए तसल्ली है के वोह जिसे तुम दोस्त रखते हो और गालियाँ देते हो वोह ज़रूर सुअरों की नस्ल से है" । हरगिज़ नहीं बल्कि ग़ुस्से से जल जाता और झुन्झलाहट से भर जाता या जो कुछ बन पड़ता उसके साथ करता यहाँ तक के मौक़ा पाता तो क़त्ल कर देता तो अशरफ़ अ़ली (थानवी) का येह तसल्ली देना इसी सबब से है के उसने मुहम्मद صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم की शान को हलका किया और नुबुव्वत और रिसालत के मरतबे और सब से बड़े रूतबे ख़त्मे नुबुव्वत की

तौहीन की और अपने नफ़्से अम्मारह की तरफ़ जो बहुत ज़्यादा उसे बदी का हुक्म देता है नुबुव्वत व रिसालत की निस्बत करने को पसंद किया । बेशक वोह अपने जी में बहुत मग़रूर हुए और बड़ी शरकशी की । तो कुछ शक नहीं के अशरफ़ अ़ली और उसका मुरीद जिन का वाक़ेअ़ बयान हुआ दोनों ने बड़े ग़ैरत वाले अल्लाह के साथ कुफ़्र किया, उन्हें नफ़्स की ख़्वाहिशों ने फ़रेब दिया और उस बड़े धोके बाज़ (यानी शैतान मरदूद) ने उन्हें अल्लाह से धोके में ड़ाला । बल्कि अशरफ़ अली का कुफ़्र सख़्त तर है और मुरीद से उसका वबाल बड़ कर । मुरीद ने तो गुमान करना कहा भी के जो कुछ कह रहा है साफ़ ग़लत और बहुत ही बुरा है और उसने (यानी अशफ़ अ़ली थानवी ने) न क़ुबूल को बुरा बताया और न ऐसा कलमा पढ़ने वाले मुरीद को झिड़का बल्कि उसे पसंद किया और उस कलमा पढ़ने वाले के लिए तसल्ली ठहराया मगर कुछ तअ़ज्जुब नहीं के वोह मुहम्मद रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وسلم को ऐसी गन्दी गाली दे जो सवाल में उससे नक़्ल हुई जिसके सबब हमारे सरदारों ओ़लमा-ए-हरमैन तय्यबैन (मक्का व मदीने शरीफ़ के ओ़लमा-ए-दीन) ने उस पर कुफ़्र का हुक्म किया तो उस से किस कुफ़्र का तअ़ज्जुब किया जाए और जब उसके नज़दीक मुहम्मद صلى الله تعالى عليه وآله وسلم सा इल्मे ग़ैब हर बच्चे और पागलों और जानवारों को हासिल हैं और इस में शक नहीं के वोह अपने नज़दीक इन बुरे कमीनों से ज़्यादा इल्म रखता है तो अपने गन्दे गुमान में मुहम्मद صلى الله تعالى عليه وآله وأصحابه وسلم से इल्म व फ़ज़ीलत में ज़्यादा हुआ तो उसे ख़्याल हुआ के अपने ही आप को नबी व रसूल समझे न के मुहम्मद صلى الله تعالى عليه وسلم को, (मआ़ज़ल्लाह) ।

अल्लाह यूँ ही मोहर लगा देता है हर मग़रूर ज़ालिम के दिल पर । मगर ख़ुदा की क़सम बेशक मुहम्मद صلى الله عليه وسلم का रब ताक में है और उनके मुख़ालिफ़ के लिए जहन्नम का

अज़ाब है और अल्लाह ख़ूब जानत है जो उनके दिलों में भरी है, और अब जान्ना चाहते हैं ज़ालिम के किस करवट पलटा खाएँगे ।

तस्दीक़ात मक्का-ए-मुअ़ज़्ज़मा

لاريب ان ما اجاب به هذا الفاضل العلامة امام احمد
رضا) هو الحق الصريح الذى لا عدول عنه والصواب
الذى لا محيص منه والله اعلم قاضى القضاة و
مفتى الاقطار العربيه ورئيس العلماء بمكة المحميه۔

तर्जमा :- कुछ शक नहीं है कि इन फ़ाज़िल अल्लामा (इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ) ने जो जवाब दिया वही साफ़ खुला हुआ हक़ है जिसमें मुँह फेरने की गुन्जाइश नहीं और ऐसा ठीक जवाब जिस से फ़रार नही ।

मक्का-ए-मुअ़ज़्ज़मा के काज़ीयुल क़ज़ा और तमाम अ़रब के शहरों के मुफ़्ती और ओलमा-ए-मक्का मुअ़ज़्ज़मा के सरदार

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान सिराज

۲۰ ذى الحجة سنه ۱۳۳۷ھ
قاضى مكة المكرمة

عبد الله بن عبد الرحمن سراج ۱۳۲۵

20, ज़िल हिज्जा 1337 हिजरी

काज़ी मक्कातुल मुकर्रमह

असद दहान

اسعد دهان ۱۳۴۰

مفتى المالكيه
محمد عابد بن حسين

मुफ़्ती-ए-मालकियह

मुहम्मद आ़बिद बिन हुसैन

محمد بن حسين ۱۳۰۰

مفتى الشافعية
عبد الله محمد صالح الزواوى

मुफ़्ती-ए-शाफियह

अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद सालेह ज़वावी

तस्दीक़ाते मदीना मुनव्वरह

بسم الله الرحمن الرحيم

لاشك ان قائل الكلمات المقدمة ما ترك شيأ من الادب مع
صاحب الشرع صلى الله تعالى عليه وآله واصحابه وسلم ومن قال ان قارب
الكفر فلا يقبح قوله بل يحسن حتى ينقاد القائل المقدم للشرع
بالرسن والله يوفقنا لما يحبه ويرضاه امين - عبيد ربه احمد شمس كان الله له في
الدارين والرمس - امين

तर्जमा :- कुछ शक नही के येह अक़्वाल जो बयान हुए (यानी अशरफ़ अ़ली थानवी के मुरीद का थानवी का कलमा पढ़ना और थानवी का उसे अच्छा कहना) उसके कहने वाले ने रसूलुल्लाह ﷺ का अदब हरगिज़ न रखा और जिस ने उसे कुफ़्र से नज़दीक बताया उसने कुछ बुरा न कहा बल्कि अच्छा कहा ताकि वोह ऐसा कहने वाले शरीअ़त की तरफ़ रस्सी के ज़ोर से खींचे, और अल्लाह तआ़ला हम सब को अपने मह़बूब की पसंदीदह पसंद बातों की तौफ़ीक़ दें । । आमीन ।

अल्लाह का छोटा बन्दा

अह़मद शम्स

अल्लाह तआ़ला दुनिया व आख़िरत व क़ब्र में उसका हो । आमीन ।

المقالة المنسوبة لاشرف على كفر صراح قبيح شنيع لا يقبل من
صاحبه زلل اللسان عندنا باجماع من يعتد به من علمائنا -
- محمد تقي الله -

तर्जमा :- वोह बातें के अशरफ अ़ली की तरफ निस्बत हुई साफ खुला गन्दा कुफ़्र है, हमारे भरोसे मन्द ओ़लमा के इत्तेफ़ाक़ से ज़बान बहेकने का बहाना मकबूल नहीं ।

मुहम्मद तक़ीयुल्लाह

الحمد لله يقول من لا فعل له ولا قول حمدان الونيسى
خادم العلم بالحرم النبوى الشريف كل من تكلم بكلمة تفيد كفرا وتشير الى
اهانته النبى صلى الله عليه وسلم لا يقبل منه زلل اللسان ولا انه
اخطأ فى المقابل بل يحكم عليه بالكفر الصراح باجماع وكيف يقول اشرف
على رسول الله لى اليقظة من غير ان يكون مجنونا ولا غائب العقل
ثم يقول زل لسانى هذا فمالا يعذر ية عند ائمتنا جميعهم
ومن افتاه بغير ذلك فالله حسيبه ومتولى الانتقام منه واظنه
انه تيب من هذا الفتوى يحشر الى جهنم بلا زبانيه اعاذنا الله
والمسلمين من امثال هذا الفتن وجزى الله الشيخ احمد رضا
خير الجزاء ومتع المسلمين بوجوده امين قاله بلسانه وكتبه
بيده حمدان الونيسى المدرس بالحرم النبوى الشريف
تحريرا فى ٢٢ ذى الحجة عام ١٣٣٧ هجرى -

तर्जमा :- सब खूबियाँ खुदा को, वोह कहता है जो न क़ौल का मालिक है न फ़ेल का (के सब का मालिक अल्लाह वहदहु ला शरीकलहु है) यानी ***हम्दनिल वनैसी*** के हरम शरीफ़े नबवी में इल्मे दीन का ख़ादिम है । जो ऐसी बात कहे के उससे कुफ़ समझा जाता है या रसूलुल्लाह की तरफ़ गुस्ताख़ी का इशारह करती हो उसका बहाना के ज़बान बहेकी या येह के ग़लती से ऐसा निकल गया कुबूल नहीं किया जाएगा, बल्कि बिल इजमा. (यानी इस पर तमाम ओलमा-ए-दीन का इत्तेफ़ाक है के) उस पर साफ़ कुफ़ का हुक्म कहा जाएगा । और क्यों कर जागने पर अशरफ अ़ली रसूलुल्लाह कहेगा हालाँकि न पागल है न अ़क़्ल ग़ायब है फिर दावा करेगा के मेरी ज़बान बेह्क गई । येह हमारे तमाम इमामों के नज़दीक मरदूद है और वोह (अशरफ अ़ली थानवी) जिस ने उस पर कुफ़ का फ़तवा न दिया अल्लाह उससे हिसाब व इन्तेक़ाम लेने वाला है और मेरा गुमान तो येह है के अगर वोह भी अपनी बात से तौबा न करे तो बग़ैर ज़बान से ऐलान किये हुए (ख़ूद अपने पाँव) जहन्नम की तरफ़ उसका ह़श्र होगा । अल्लाह तआला हमें और सब मुसलमानों को ऐसे फ़ित्नों से बचाए और हमारे शेख़ इमाम अहमद रज़ा को बेहतर जज़ा अ़ता फ़रमाए और मुसलमानों को उनके (यानी आला ह़ज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ) के वजूद से फ़ैज़याब रखे ।आमीन.। इसे अपनी ज़बान से कहा और हाथ से लिखा--

हम्दनिल वनैसी मुदर्रीस हरम शरीफ़े नबवी, ने ।

तहरीर 22 ज़िल्लहिज्जह 1337 हिजरी ।

The End

रज़ा एकेडमी मुंबई की हिन्दी मतबूआ़त

	नाम किताब	तस्नीफ़
१.	कंज़ुल ईमान फ़ी तर्जमतिल क़ुरआ़न	सय्येदुना अअ्ला हज़रत अलैहिर्रहमा
२.	अनवारुल बिशारह (हज्ज व ज़ियारत)	″ ″ ″
३.	मज़ाराते औलिया पर रौशनी	″ ″ ″
४.	शाने हुज़ूर ग़ौसे अअ्ज़म	″ ″ ″
५.	सबूते हिलाल के तरीक़े	″ ″ ″
६.	मीलादे मुस्तफ़ा	″ ″ ″
७.	मसाइले वुज़ू	″ ″ ″
८.	फ़ातिहा का सबूत	″ ″ ″
९.	अक़ाएदे हक़्क़ा	″ ″ ″
१०.	तिजारत का जाइज़ तरीक़ा	″ ″ ″
११.	दअ्वते मय्येत	″ ″ ″
१२.	इल्मे ग़ैबे रसूल	″ ″ ″
१३.	ख़िज़ाब का मस्अला	″ ″ ″
१४.	अज़ाने क़ब्र	″ ″ ″
१५.	मेहमान नवाज़ी के फ़ज़ाइल	″ ″ ″
१६.	निदाए या रसूलल्लाह	″ ″ ″
१७.	इरफ़ाने शरीअ़त	″ ″ ″
१८.	इमामते सिद्दीक़ व अ़ली	″ ″ ″
१९.	अहकामे तस्वीर	″ ″ ″
२०.	नजात नामा	″ ″ ″
२१.	झूटे रसूल का नया कलिमा	″ ″ ″
२२.	ज़बीहे इसाले सवाब	″ ″ ″
२३.	बुज़ुर्गाने दीन से इस्तिआनत	″ ″ ″
२४.	जमाले मुहम्मद मुस्तफ़ा	मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी
२५.	हमारे अअ्ला हज़रत	मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी